उपसंहार

सब बातों का सार

''उस ने अपनी इच्छा का भेद उस सुमति के अनुसार हमें बताया जिसे उस ने अपने आप में ठान लिया था। कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे'' (इफिसियों 1:9, 10)।

''ज़्योंकि उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है। और तुम उसी में भरपूर हो गए हो जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है'' (कुलुस्सियों 2:9, 10)।

हर प्रचारक या वज़्ता के सामने कभी-कभी ऐसी स्थिति आ जाती है जिसे ''मंच का भय'' कहा जाता है। उसके पसीने छूट जाते हैं, उसका मुंह सूखकर रूई की तरह हो जाता है और टांगें कांपने लगती हैं। उसे ऐसा लगता है जैसे उसके पेट में तितलियों की तरह कोई चीज़ फड़फड़ा रही है।

एक जगह जहां मैं प्रचार कर रहा था, मैंने देखा कि पुलपिट के दोनों ओर हैंडल लगे हुए हैं। ये हैंडल अच्छी तरह से लगाए गए थे ताकि बोलने वाला आसानी से इन्हें पकड़ सके। मैंने किसी से बताया तो नहीं कि वे हैंडल ज़्यों लगाए गए थे, परन्तु घबराए हुए प्रचारक के लिए अपने आप को सज़्भालने के लिए वे बहुत सही थे।

एक प्रचारक ने बताया कि जब वह प्रचार करने लगा, तो मण्डली के सामने बोलने से इतना डर गया कि उसके घुटने अपने आप में बज नहीं रहे थे, *बल्कि वे एक दूसरे के पास से गुज़र रहे थे!* उसने बताया कि उसके घुटने इतने ज़ोर से कांप रहे थे कि वे एक दूसरे को बिना छूए वापस चले जाते थे। सरमन या प्रवचन देने से पहले या लोगों के सामने बोलने से पहले की घबराहट का मूल कारण यह है कि *वज़्ता को इस बात का ध्यान नहीं है* कि उसके साथ ज़्या होने वाला है। परिपज़्व वज़्ता के लिए, अच्छी तरह से तैयारी और प्रभु में भरोसा आत्मिक विश्वास के स्थान पर असुरक्षा की जगह ले लेता है।

बहुत घबराए हुए वज़्ता की तरह, यह समझ न आने पर कि जीवन कैसे जिया जाए, हम बेचैन और अनिश्चित हो जाते हैं। निराश करने वाली चिंता वह रहस्य हो सकती है जिसे हमने दूसरों से छुपाए रखा है; परन्तु दूसरों को पता हो या केवल हमें ही पता हो, हमारी उस अंदरूनी शांति को जो परमेश्वर चाहता है कि हमारे पास हो, छीनकर यह हमारे जीवन को अपंग बना देती है। हैरानी की बात है कि बाइबल कहती है कि ''शांत निराशा'' की इस

समस्या का समाधान लोगों के सामने बोलने के भय को निकालने जैसा ही है। पाप, मृत्यु तथा परमेश्वर के बारे में ''मन में छुपा'' भय तब तक नहीं जाएगा जब तक हम अनिश्चितता को निकालकर सच्चाई पर आधारित जीने के ढंग से मिले पक्के आश्वासन को नहीं लाते।

यह जानते हुए कि हम वहां हैं जहां परमेश्वर हमें चाहता है और हम वह कर रहे हैं जो परमेश्वर हमसे करवाना चाहता है, हमारे अन्दर ऐसी शांति और आत्मविश्वास मिलता है जिसे परमेश्वर के बिना इस संसार के किसी वस्तु या व्यक्ति से नहीं मिल सकता।

निजी शांति का यह विचार कुलुस्सियों 2:10क के साथ जुड़ा है, जहां पौलुस ने कहा कि ''तुम उसी [अर्थात मसीह] में भरपूर हो गए हो'' (कुलुस्सियों 2:10)। अन्य शब्दों में, परमेश्वर ने समयरहित भण्डारों की परिपूर्णता मसीह में रखी है। कोई आश्चर्य की बात नहीं कि पौलुस ने कहा, ''ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे'' (इफिसियों 1:10ख)। मसीह हमारी पर्याप्तता है, क्योंकि परमेश्वर के अनुग्रह की सारी आशिषें उसकी आत्मिक देह में ही हैं।

यह सच है ''क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उस में सारी परिपूर्णता वास करे'' (कुलुस्सियों 1:19)। इसीलिए पौलुस कह पाया, ''क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है'' (कुलुस्सियों 2:9), और वह कलीसिया की ''सब वस्तुओं पर शिरोमणि'' है जो ''उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है'' (इफिसियों 1:22ख, 23)।

इस सब की अच्छी बात यह है कि मसीह में जो कोई भी है, वह परमेश्वर के वचन की रोशनी में चल रहा है और वह निश्चिंत होकर भय से छूट सकता है, क्योंकि वह परमेश्वर के उद्धार तथा जीवन में प्रवेश कर गया है। यह महत्वपूर्ण सच्चाई आज परमेश्वर के सामने हमारे अपने बारे में विचार को प्रभावित करके और उसके साथ चलने के लिए हमारे भविष्य की स्थिति तय करके हमारी सोच को बदल देती है। इससे हमारे अंदर के विचार और सबसे अच्छी योजनाएं प्रफुल्लित होनी चाहिए।

सुसमाचार की सच्चाई के बारे में ध्यान से विचार करें कि कलीसिया में हमें परमेश्वर की परिपूर्णता मिली है। मेरे साथ इस प्रश्न के लिए पवित्र शास्त्र में खोज करें कि ''मसीह में परिपूर्ण होने का क्या अर्थ है?''

क्षमा में परिपूर्ण

मसीह में परिपूर्ण होने का अर्थ है कि हम परमेश्वर से मिली क्षमा में परिपूर्ण हैं। नया नियम अनुग्रह के केवल एक ही स्थान को जानता है और वह स्थान मसीह की आत्मिक देह है! परमेश्वर ने उद्धार की अपनी योजना बनाई है ताकि छुटकारा *केवल* उसके पुत्र में ही हो (यूहन्ना 14:6)। इसलिए यदि आप मसीह में हैं, तो आप छुटकारे के क्षेत्र में हैं (रोमियों 8:1); यदि आप मसीह से बाहर हैं, तो आप दण्ड के क्षेत्र में (इफिसियों 2:12), अर्थात शैतान के राज्य में हैं (कुलुस्सियों 1:13)।

कोई व्यक्ति दो आत्मिक स्थानों में से केवल एक में ही हो सकता है। या तो मसीह में

है या मसीह के बाहर, अर्थात या तो वह उद्धार के स्थान में है या परमेश्वर से दूरी के स्थान में। *यह या वह के संसार में हम न यह न वह नहीं हो सकते*!

निश्चय ही, मसीह में होने वाले व्यज़्ति के लिए मसीह का उद्धार पाने के लिए प्रकाश में चलना आवश्यक है (1 यूहन्ना 1:7); वरना, वह उद्धार पाने के लिए उस स्थान में (अर्थात मसीह में) होकर भी शमौन की तरह जिसके पास उद्धार तो था लेकिन उसने इसे खो दिया हो सकता है (प्रेरितों 8:20, 21)। विश्वास से चलने के लिए दो विशेषताएं होनी आवश्यक हैं: पहली, इसका अर्थ अपने उद्धार के लिए यीशु पर भरोसा करना है (इफिसियों 2:8, 9), और दूसरी, मसीह की इच्छा को मानने के लिए सच्चे मन से खोज करना (इब्रानियों 5:8, 9)।

छुटकारा पाया हुआ व्यज़्ति अंधेरे के वश से छुड़ाए जाकर उसके ''प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश'' करता है ''जिस में हमें छुटकारा अर्थात पापों की क्षमा प्राप्त होती है'' (कुलुस्सियों 1:13ख, 14)। मसीही बनने वाले अन्यजातियों के लिए, पौलुस ने कहा, ''पर अब तो मसीह यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो'' (इफिसियों 2:13)। पतरस के अनुसार, मसीह में होने वाले सभी लोगों को जो मसीही अनुग्रह में बढ़ते हैं, स्वर्ग के अनन्त राज्य में भरपूरी से प्रवेश दिया जाएगा:

> इस कारण हे भाइयो, अपने बुलाए जाने, और चुन लिए जाने को सिद्ध करने का भली-भांति यत्न करते जाओ, ज़्योंकि यदि ऐसा करोगे, तो कभी ज़ी ठोकर न खाओगे। बरन इस रीति से तुम हमारे प्रभु और उद्धारकर्ज़ा यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करने पाओगे (2 पतरस 1:10, 11)।

यीशु ने इस सच्चाई को बड़ी अच्छी तरह अपने एक दृष्टांत से समझाया (मज़ी 20:1-16)। दाख की बारी के मालिक ने सुबह-सुबह, फिर 9 बजे, 12 बजे, 3 बजे और 5 बजे मजदूरों को भाड़े पर लिया। शाम को, उसने हर कर्मचारी को समान वेतन दिया! यह कुछ अटपटा सा लगता है, है न? आम तौर पर कोई किसान अपने कर्मचारियों को तभी समान वेतन देता है यदि उन्होंने एक समान घण्टे काम किया हो। यीशु की कहानी से यह नहीं दिखाया गया कि आज हम खेत में ज़्या काम करते हैं या पहली सदी के संसार में किसान ज़्या करते थे, बल्कि यह समझाया गया है कि अनुग्रह के राज्य में परमेश्वर ज़्या करता है।

''क्रूस के कदमों में भूमि समतल है।'' मसीह में किसी को दूसरों से बढ़कर उद्धार नहीं मिलता। यदि आप मसीह में हैं और उद्धार के लिए यीशु पर भरोसा करते हैं और सच्चे मन से उसकी इच्छा को मानना चाहते हैं, तो आपका उद्धार भी वैसे ही होगा जैसे मसीह में आने वाले किसी दूसरे का होता है।

सुसमाचार की उस दया के द्वारा जिसे कमाया नहीं जा सकता हर एक को एक ही तरह से परमेश्वर के पास आना होगा है। सब ज़िज़्मेदार लोग पापी हैं और उन्हें मसीह के लहू के द्वारा उद्धार चाहिए। कोई भी इस बात पर घमण्ड नहीं कर सकता कि उसे थोड़े से उद्धार की

आवश्यकता है जबकि दूसरों को बहुत से उद्धार की। न कोई यह ही कह सकता है कि वह थोड़ा सा खोया हुआ है जबकि दूसरे पूरी तरह से खोए हुए हैं। हर कोई उतना ही खोया हुआ है ज़्योंकि मसीह के बाहर सब लोग पूरी तरह से खोए हुए हैं और मसीह में होने वालों का पूरा उद्धार होगा। कोई थोड़ा मसीह में या थोड़ा सा मसीह के बाहर नहीं हो सकता।

उद्धार की इस सच्चाई को एकरूपता के शीशे से देखें। नूह के जहाज़ में केवल आठ लोगों को ही प्रवेश करने की अनुमति दी गई थी। लेकिन जहाज़ में आ जाने पर आठों लोग सुरक्षित थे। कोई भी दूसरे सात लोगों से अधिक सुरक्षित नहीं था। नूह आत्मिक तौर पर दूसरों से अधिक परिपज़्व होगा, परन्तु जहाज़ में हर हानि से वे सभी बच गए थे। जहाज़ के बाहर के हज़ारों लोग पानी की कब्र में दफ़न हो गए थे।

मसीह में खड़े होने से बढ़कर हमारी
स्थिति अच्छी नहीं हो सकती;
पिता से हमें उन आशिषों से बढ़कर नहीं
मिल सकतीं जो हमें मसीह में मिलती हैं;
आत्मिक विकास के लिए मसीह में होने
के अवसर से बढ़कर अवसर नहीं हो सकता।

कुछ साल पहले मैंने एक ऐसे व्यज़्ति के साथ बाइबल अध्ययन किया जिसने अपने जीवन में पहले कोई बैंक लूटा था। उसे अपने अपराध का दण्ड मिल चुका था और उसने अपना समय पश्चाज़ाप में बिताया था। जीवन के अंतिम समय, उसे कैंसर हुआ और जीने के लिए केवल कुछ ही दिन पाकर उसने पूछा कि मैं उसके पास आकर उसे बताऊं कि मसीही कैसे बना जा सकता है। अस्पताल में मैं उसके पलंग पर एक ओर बैठकर पवित्र शास्त्र का वह भाग पढ़ने लगा जिसमें उद्धार का ढंग समझाया गया है। लगभग दो घण्टे उसके साथ अध्ययन करने के बाद, उसने रोते हुए बपतिस्मा लेने की इच्छा जताई ताकि वह मसीही बन सके। मैंने पूछा, ''यदि आप चंगे हो जाते हैं, तो ज़्या आप उसकी सेवा करना चाहेंगे ?'' उसने कहा कि वह अपना बाकी जीवन मसीह के लिए जीना चाहता है चाहे कुछ भी हो जाए। बाद में मसीही लोग बपतिस्मा देने के लिए उसे पास की एक बेपटिसरी में स्ट्रेचर पर डालकर ले गए थे। बपतिस्मा लेने के एक सप्ताह बाद वह जीवन के दूसरी ओर पार चला गया।

यद्यपि उसने 99 प्रतिशत जीवन का भाग अंधकार के राज्य में ही बिताया, परन्तु यह मानकर कि आज्ञा मानने की उसकी बात निष्कपटता से थी और उसका विश्वास निष्कपट था, बपतिस्मे के समय वह अनुग्रह के राज्य में प्रवेश कर गया। यद्यपि अवसर की अपने जीवन की आधी रात से कुछ मिनट पूर्व ही उसने प्रवेश किया, परन्तु अनन्त जीवन का दान उसे भी वैसे ही मिलेगा जैसे जीवन के आरज़्भिक समय में प्रवेश करने वालों को मिलता है ज़्योंकि जीवन के अपने अंतिम सप्ताह में वह छुटकारे की स्थिति, अर्थात मसीह में परिपूर्णता

में रहा। जीवन के खेल की अंतिम पारी में उसने संघर्ष किया और विजय पा ली।

मसीह की आत्मिक देह में प्रवेश करने का ढंग बताता एक स्पष्ट पद है गलतियों 3:27: ''और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।'' ज़रा विचार करें: परमेश्वर और मसीह के पास विश्वास में आने वाला कोई भी, सब पापों से पश्चाताप करने वाला, यीशु में अपने विश्वास का अंगीकार करके और मसीह में बपतिस्मा लेकर परमेश्वर से तुरन्त पूर्ण क्षमा में हो लेता है। वह छुटकारा पाए हुओं के उस क्षेत्र में प्रवेश कर जाता है जहां सब को पापों की क्षमा और अनन्त जीवन मिला है।

प्रबन्धों में परिपूर्ण

एक तरह से मसीह में पूर्ण होने का अर्थ यह है कि हम आत्मिक प्रबन्धों में परिपूर्ण हैं। अनन्त महिमा के प्रतिज्ञा किए हुए उस देश में हमारी यात्रा के लिए कोई भी आत्मिक आवश्यकता या संसाधन हमारे लिए उपलज़्ध हैं।

कुलुस्से की कलीसिया किसी प्रकार के विधर्म (शायद प्रारज़्भिक ज्ञानवाद) से ग्रस्त थी जिससे उद्धार की परमेश्वर की योजना में मसीह की जगह कम हो गई थी। गलत शिक्षा को बेअसर करने के लिए, पौलुस ने कुलुस्से के लोगों को मसीह की श्रेष्ठता विस्तार से समझाई। उसने कहा, कि मसीह में परमेश्वरत्व की परिपूर्णता सदेह वास करती है (कुलुस्सियों 2:9)। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर पिता, पुत्र यीशु और पवित्र आत्मा हमें जो कुछ भी देना चाहते हैं वह पूरी तरह से, नि:शुल्क और मसीह में ही मिलता है। वह उन सभी आत्मिक धनों का जो परमेश्वर हमें देना चाहता है स्रोत, मूर्त रूप और पूरी तरह से प्राप्ति है जिसका अर्थ यह हुआ कि हम उसमें सिद्ध होते हैं (कुलुस्सियों 2:10) अर्थात हमें कोई कमी नहीं रहती।

इफिसियों की पत्री के आरज़्भ में यह कहते हुए कि ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उसने हमें *मसीह में* स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है'' (इफिसियों 1:3) पौलुस ने मसीह में इस परिपूर्णता के लिए परमेश्वर की महिमा की। पतरस ने अपने दूसरे पत्र के आरज़्भ में ऐसी ही घोषणा की: ''परमेश्वर के और हमारे प्रभु यीशु की पहचान के द्वारा अनुग्रह और शान्ति तुम में बहुतायत से बढ़ती जाए। ज़्योंकि उसके ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन भज़्ति से सज़्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्‌गुण के अनुसार बुलाया है'' (2 पतरस 1:2, 3)। पौलुस ने हमें बताया कि आत्मिक आशिषें कहां *हैं,* जबकि पतरस ने हमें बताया कि *हम उन्हें प्राप्त कैसे करें*। परन्तु दोनों लेखकों ने हमें दिए गए परमेश्वर के दानों की पूर्ण पर्याप्तता पर ज़ोर दिया।

''पानी में चलने वाले जहाज़ों'' अर्थात पनडुज़्बियों पर विचार करें। वे लोगों के दल को गहरे समुद्र में से सुरक्षित और आसानी से ले जा सकती हैं। तल के नीचे ''जीवित समाज'' के रूप में उनमें भोजनकक्ष, बिस्तर, मनोरंजन की सुविधाएं, हर प्रकार की संचार प्रणाली और आवश्यकता की हर आधुनिक तकनीक मिलती है।

बड़ी-बड़ी घाटियों, ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों में समुद्र की सतह पर खतरे मण्डराते रहते हैं, लेकिन पनडुब्बी न केवल अपने यात्रियों को सुरक्षा देते हुए बल्कि यात्रा के उनके जीवन को सामान्य बनाते हुए इन खतरों से बिना किसी हानि के निकल जाती है! अजीब भिन्नता है: मृत्यु, आतंक और अंधेरे के बीच में सुरक्षा, जीवन और आनन्द!

इससे भी बढ़कर, मसीह में हमारा जीवन भी इससे मिलता जुलता बताया जा सकता है। उसमें हम अनन्त मृत्यु से छूटते ही नहीं बल्कि पाप के न खत्म होने वाले परिणामों से भी बचते हैं (रोमियों 8:1), हमें जीवन के एक नये गुण के लिए प्रबन्ध मिले हैं स्वर्ग की आत्मिक बहुतायत की भरपूरी से हर रोज़ गिरकर (यूहन्ना 10:10) हम आने वाली महिमा का स्वाद चखते हैं।

जैसे पनडुब्बी के बाहर रहने वाला सागर के खतरों से शीघ्र नष्ट हो जाता है वैसे ही मसीह के बाहर रहने वाले के लिए कोई आशा नहीं है (इफिसियों 2:12)। उद्धार की पनडुब्बी मसीह की देह है। उसमें हम सुरक्षित हैं; उसके बाहर पाप के समुद्र में हम कुचल दिए जाते हैं। मसीह हमारी सुरक्षा और प्रबन्ध, हमारा बचाव और संरक्षण है।

यदि आप मसीह के बाहर हैं, तो निश्चय ही आप पूछ रहे हैं, ''मसीह में कैसे प्रवेश करते हैं?'' ध्यान से सुनें कि पौलुस उसकी देह में आने का ज़्या ढंग बताता है: ''ज़्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का [में] बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का [में] बपतिस्मा लिया?'' (रोमियों 6:3)। बपतिस्मे से उसकी मृत्यु में शामिल होकर अपने विश्वास को दिखाने पर मसीह की देह का एक अंग बन जाते हैं, और आज्ञाकारी विश्वास से जीवन बिताते हुए उसमें रहते हैं।

सामर्थ में परिपूर्ण

मसीह में पूर्ण होने का अर्थ यह भी है कि हम सामर्थ में परिपूर्ण हों, अर्थात उन सब तक हमारी पूरी पहुंच है जो परमेश्वर अपने बच्चों को प्रदान कर रहा है। मसीह में आत्मिकता और मसीह जैसे स्वभाव में बढ़ने के लिए समान अवसर का स्थान है।

मसीह के बाहर होने वाले को उसके पाप के द्वारा परमेश्वर के साथ संगति रखने में रुकावट पड़ती है; मसीह में कोई दूरी नहीं रहती, ज़्योंकि हमारे पिछले पाप को उसके लहू के द्वारा मिटा दिया *गया है* और वर्तमान पाप को मिटाया *जा रहा है*। इसलिए, ''उसके द्वारा,'' जो भी मसीह में है, यहूदी हो या अन्यजाति सब की, ''एक आत्मा में पिता के पास पहुंच होती है'' (इफिसियों 2:18)। प्रवेश करने की यह आज़ादी केवल खुला द्वार ही नहीं बल्कि ऐसा खुला द्वार है जिसमें एक स्वागती संदेश भी लटका हुआ है। जहां लिखा है, ''जिस में हम को उस पर विश्वास रखने से हियाव और *भरोसे से निकट आने* का अधिकार है'' (इफिसियों 3:12)।

आपने किसी को विदेश आदि जाते समय यह कहते सुना होगा, ''आकर हमें मिल लेना!'' यह ''अलविदा'' कहने का बोलचाल का ढंग है। यह किसी को बोलने वाले के घर आने का विशेष निमन्त्रण देने के लिए नहीं कहा गया होता। हम कह सकते हैं कि यह

अधूरी अर्थात उत्साहहीन बिनती है जो वास्तव में गंभीरता से लेने के लिए नहीं है। हमारे स्वागत के लिए परमेश्वर का वचन असावधानी से कहा गया या बिना गहरे अर्थ के नहीं है। उसने न केवल हमें अपनी संगति में आने के लिए उत्साहित किया है बल्कि तड़प से जो कहने से बाहर है, वह हमारी संगति करने का इच्छुक है। उसका मन उस प्रेम के साथ हम तक पहुंचता है जो मृत्यु से शक्तिशाली है।

परमेश्वर की संतान होने के नाते स्वर्ग के आत्मिक गोदाम पर हमारी पहुंच के कारण, हर मसीही यूहन्ना के साथ कह सकता है, ''देखो पिता ने हमसे कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं, और हम हैं भी'' (1 यूहन्ना 3:1क)।

मसीह में छुड़ाए हुए व्यक्ति को परमेश्वर, मसीह और पवित्र आत्मा के साथ होकर चलने की उसकी इच्छा के अनुसार अनुमति है। संगति में उसके विकास को कभी भी अवसर की कमी या पूर्ण प्रवेश की कमी के द्वारा रोका नहीं जा सकता। परमेश्वर के निकट आने में किसी प्रकार की असफलता हमारे ही कारण होगी न कि परमेश्वर के कारण। हम में से हर किसी को जो मसीह में है अपने पिता के पास स्वतन्त्रता से आने की खुली छूट है, हम मसीह में एक दिन से हों या एक दशक से, एक मिनट से या एक महीने से। पौलुस लिखता है, ''अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतन्त्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो'' (गलातियों 3:28)। हम सच्चाई, संगति और परमेश्वर तक पहुंचने और उद्धार में एक किए गए हैं; इसलिए मसीह में हम सचमुच एक हैं।

हमें याद रखना चाहिए कि आवश्यक नहीं कि इस *आशीष* का अर्थ *स्वामित्व* हो और प्रवेश के अधिकार का अर्थ आवश्यक नहीं कि यह हो कि हमने प्रवेश कर लिया है। मैंने एक आदमी के बारे में पढ़ा है जो अपने कुछ मित्रों से मिलने के लिए अटलांटिक महासागर को पार करने की योजना बना रहा था। समुद्री जहाज़ के टिकट के लिए धन जुटाने के लिए उसे काफी संघर्ष करना पड़ा। जाने के लिए अतिरिक्त पैसे जुटाने के लिए कई साल तक उसने काफी परिश्रम किया। इस बात से अनजान कि टिकट के खर्च में भोजन भी शामिल था, अपना टिकट खरीदकर वह लम्बी समुद्री यात्रा के लिए चल पड़ा और अपने सामान में खाने के लिए कुछ बिस्कुट इत्यादि रख ले गया। यात्रा के लिए उसने खाने-पीने का सामान ले लिया। उसे लगा ''एक-दो सप्ताह के लिए यह काफ़ी होगा।'' अटलांटिक के आगे बीच रास्ते में, किसी ने अचानक उसे बताया कि उसके टिकट के खर्च में भोजनकक्ष में मिलने वाला गर्म भोजन भी शामिल है!

ज्ञान न होने के कारण यह आदमी अपनी आशिषों के बिना रह रहा था। उसे भी दूसरे किसी यात्री की तरह ही भोजन कक्ष में खाने का अधिकार था, परन्तु वह वह लाभ नहीं ले रहा था जिसके लिए उसने दाम चुका दिया था। उसने कब्ज़ा नहीं लिया था; और न ही उसने अपनी क्षमता प्राप्त की थी।

बहुत पुरानी बात है जब इस्राएली लोग कनान देश के पास आए, तो उन्होंने परमेश्वर की प्रतिज्ञा के ''उस देश को जिसे मैं उनको देता हूं'' (यहोशू 1:2) पा लिया। खुशी का दिन

शीघ्र ही आ गया जब उन्होंने यरदन नदी को पार करके वह कज़्ज़ा लिया जो परमेश्वर ने उन्हें दिया था। परमेश्वर ने उनसे कहा, ''तुम को ... उस देश को अपने अधिकार में लेने के लिए जाना है जिसे तुज़्हारा परमेश्वर यहोवा तुज़्हारे अधिकार में देने वाला है'' (यहोशू 1:11)।

मसीह में वही निर्देश परमेश्वर ने हमें दिया है: ''मैंने तुझे अपनी सारी आशिषें पाने की छूट दी है। मसीह में तेरे लिए बुद्धि और ज्ञान के सभी भण्डार, मेरे साथ संगति, और मेरी सामर्थ से विजय उपलज़्ध है; परन्तु तेरे लिए आगे बढ़कर उन्हें लेना आवश्यक है। मैंने तुझे वह देश दे दिया है, परन्तु उस पर अधिकार करना तेरा काम है।''

जो लोग यीशु की आत्मिक देह में हैं वे सामर्थ में परिपूर्ण हैं। हमें पौलुस, पतरस और यूहन्ना की तरह ही परमेश्वर के निकट और उसके साथ-साथ चलने का अवसर मिला है। परमेश्वर के साथ हमारी संगति में बाधा केवल हमारा हठ जैसे कि पाप, सुस्ती, स्वार्थ और घमण्ड है। हमारे हाथ में मनुष्यों को दिया गया परमेश्वर का सज़्पूर्ण प्रकाशन बाइबल है। आरज़्भ में परमेश्वर की बात मानकर और मसीह में आकर हम अपने शेष जीवन के लिए उसके ज्ञान में बढ़ सकते हैं। पवित्र आत्मा हम में वास करता है, और हमें प्रार्थना करने का विशेषाधिकार प्राप्त होता है (गलातियों 4:6)। परमेश्वर हमारा स्वागत कभी नीरसता से नहीं करता; वह कभी इतना व्यस्त नहीं होता कि हमारी प्रार्थना सुनने का उसके पास समय न हो। वह हर रोज हमारे साथ चलना चाहता है और धीरज से प्रतीक्षा करता है कि हम उसकी संगति और उसके आनन्द को समझ सकें। प्रतिदिन हम उसकी वह आराधना कर सकते हैं जो उसे भाती अर्थात स्वीकार्य है अर्थात उनका जो सुगंधि की तरह उसे भाते और उसके सामने आते हैं स्तुति रूपी बलिदान। मसीह के द्वारा हमें परमेश्वर के सब धन तक पहुंचने के लिए सामर्थ मिली है।

सारांश

इससे हमें कितना आनन्द मिलना चाहिए कि हम मसीह में प्रति पूर्ण अर्थात क्षमा में, प्रबन्धों में और सामर्थ में सिद्ध होते हैं। मसीह में स्थिर होने से बढ़कर हमारी स्थिति अच्छी नहीं हो सकती; हमें पिता से उन आशिषों से अधिक नहीं मिल सकतीं जो हम मसीह में पाते हैं; आत्मिक विकास के लिए मसीह में होने का अवसर सबसे बड़ा है। हम *The summum bonum,* अर्थात चोटी, सबसे ऊंचे, सबसे अच्छे के पास आए हैं। हम सब बातों के सार तक आ पहुंचे हैं। इसीलिए पौलुस ने लिखा, ''ज़्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उस में सारी परिपूर्णता वास करे। और उसके क्रूस पर बहे हुए लोहू के द्वारा मेल मिलाप करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा अपने साथ मेल कर ले, चाहे वे पृथ्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग में की'' (कुलुस्सियों 1:19, 20)।

यदि आप सौ मीटर की दौड़ में सोने का तमगा जीत लें और आपको पता चले कि उस दौड़ में आप संसार के सर्वोज़म धावक थे तो? यदि आप अमेरिका के राष्ट्रपति हों और आपको पता चले कि अमेरिका का सबसे बड़ा पद आपके पास है तो ज़्या हो? यदि आप

संसार के सबसे धनी व्यज़्ति हों और आपको पता चले कि आपसे अधिक धन किसी के पास नहीं है ? ज़्या आप जीवन के शिखर तक होंगे ? ज़्या इससे आपके लिए जीवन सिद्ध हो जाएगा ? मुझे तो नहीं लगता।

हर कोई जो मसीह में है चाहे वह कितना भी दरिद्र ज़्यों न हो और बाकी संसार के लिए चाहे कितना भी अज्ञात ज़्यों न हो, वह परमेश्वर की दृष्टि में सबसे महत्वपूर्ण है। सोने का तमगा जीतने वाले, राष्ट्रपति या सबसे धनी व्यज़्ति मसीह में होने वाले व्यज़्ति से निर्धन हैं। उसकी आत्मिक देह के अंग या सदस्य के रूप में, आपके पास वह सब कुछ है जो उनके पास नहीं। मसीही युग में परमेश्वर जो कुछ भी किसी को देना चाहता है उस तक आपकी पहुंच है।

यदि आप मसीह में हैं, तो किसी के पास भी उतना धन नहीं है जितना आपके पास है: ''ज़्योंकि सब कुछ तुज़्हारा है। ज़्या पौलुस, ज़्या अपुल्लोस, ज़्या कैफा, ज़्या जगत, ज़्या जीवन, ज़्या मरण, ज़्या वर्तमान, ज़्या भविष्य, सब कुछ तुज़्हारा है, और तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर का है'' (1 कुरिन्थियों 3:21ख–23)। यदि आप मसीह में नहीं हैं, तो संसार में आप से निर्धन कोई नहीं है, ''... मसीह से अलग और इस्राएल की प्रजा के पद से अलग ... और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और आशाहीन और जगत में ईश्वररहित'' (इफिसियों 2:12)।

सब बातों का सार सुनें: *मसीह के बिना, हमारा कोई महत्व नहीं है; उसके साथ हमारी हर बात का सही महत्व है।*